डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 11.06.2021

Page No.:

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथमसर्ग

पद्यांश व्याख्या -

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्
ततस्ततस्या विनियन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनी
रुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः ॥27॥

अन्वयः- ततः द्रुपदात्मजा द्विषतां सिद्धिं निशम्य ततस्त्याः अपाकृतीः विनियन्तुम् अक्षमा सती नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजहार।

भावार्थ:-

शत्रुओं की समृद्धि और उन्नति का समाचार सुनकर द्रौपदी अपने भावावेश को न रोक सकी और राजा के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने वाले वचन कहने लगी।

भाषार्थ-

(ततः) तब (द्विषतां सिद्धिं निशम्य) शत्रुओं की समृद्धि सुनकर (ततस्त्याः) उससे आये हुए (अपाकृतीः) मनोविकारों को (विनियन्तुम् अक्षमा) रोकने में असमर्थ (द्रुपदात्मजा) द्रौपदी ने (नृपस्य) राजा के (मन्युव्यवसाय-दीपिनीः) क्रोध तथा ~~उत्साह~~ उद्योग को बढ़ाने वचन कहे।

पदव्याख्या- द्विषताम् = शत्रुओं की, द्विषन्तीति द्विषन्तः, तेषाम्। द्विष् + शतृ (कर्तरि) सिद्धिम् = सफलता को, सिध् + क्तिन् (भावे)। निशम्य = नि + शम् + क्त्वा (ल्यप्) (अपाकृतीः) मनोविकारों को

"You have to take the calculated risk, to earn something." —Dhirubhai Ambani

IND CamScanner App

Date ___/___/______ Page No.: ______

भावावेगों को, क्रोधावेग के लक्षणों को।
अपाकरणम् अपाकृति:, ताः। अप + आ + कृ + क्तिन् (भावे)। ततः = तब। ततस्त्याः = उनसे आई हुई, शत्रुओं से आई हुई अथवा उससे = सुनने से आई (अपाकृति का विशेषण)। तस्मादिति ततः, तद् + तसिल्। तत आगताः ततस्त्याः। ततस् + त्यप् + टाप्।
विनियन्तुम् + अक्षमा = रोकने में असमर्थ, नियन्त्रण करने में असमर्थ, वि + नि + यम् + तुमुन्। क्षमा = क्षम् + अच् + टाप्। क्षमते इति क्षमा, न क्षमा अक्षमा (नञ्तत्पुरुष) मन्युव्यवसाय दीपिनीः = क्रोध और उद्योग को उत्तेजित करनेवाली (गिरः का विशेषण) व्यवसायः = वि + अव् + सो + घञ् (भावे) दीपिनीः = बढ़ाने वाली, दीपयिष्यन्तीति दीपिन्यः, ताः। दीप् + णिनि, स्त्रियां ङीप्। मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ (द्वन्द्व), मन्यु-व्यवसाययोः दीपिन्यः मन्युव्यवासाय दीपिन्यः, ताः। गिरः द्रुपदात्मजा उदाजहार = वचन राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी ने कहे। आत्मनो जाता आत्मजा। द्रुपदस्य आत्मजा द्रुपदात्मजा (षष्ठी तत्पुरुष), उद् + आ + हृ + लिट्।

टिप्पणी -

'ततस्ततस्त्या' में वृत्त्यनुप्रास है। 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' मम्मट। इति।

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." —Mahatma Gandhi

IND CamScanner App